International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-11-2018; Accepted: 17-12-2018
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 1; January 2019; Page No. 17-19

हठयोग साधना का आधारभूत ग्रंथ गोरक्षशतक विभिन्न विद्वानों के मतों की समीक्षा : एक अध्ययन

उमाशंकर कौशिक [1], नीलू विश्वकर्मा [2], अखिलेश कुमार विश्वकर्मा [3], डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री [4]
[1-3] शोधार्थी, योग एवं आयुर्वेद विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत।
[4] सहायक प्राध्यापक, योग एवं आयुर्वेद विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
हठयोग साधना एक महत्वपूर्ण यौगिक साधना है। जिसमें हठ शब्द, दो शब्दों से मिलकर बना है। वह हैं– ह + ठ अर्थात हठ। नाथ योगियों ने हठ का अर्थ शरीर में स्थित शक्ति की दो विपरीत धाराओं से लिया है, जो सामान्य अवस्था में एक दूसरे के विपरीत कार्य कर साधकों की मुक्ति में बाधक होते हैं। इन्हीं शक्ति की दो धाराओं को विभिन्न यौगिक अभ्यासों आसन, प्राणायाम, यौगिक आहार, मुद्रा, बंध, धारणा, ध्यान, समाधि आदि से सुप्त आंतरिक शक्ति (कुण्डलिनी) को जागृत करना ही हठयोग साधना का परम लक्ष्य है। गोरक्षशतक हठयोग साधना का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। जिसके रचनाकार प्रसिद्ध नाथ योगी गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) को माना जाता है। जिसमें सौ श्लोकों में गोरक्षनाथ के छः योगांगों आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि की चर्चा है। उपरोक्त ग्रंथ गोरक्षशतक पर विभिन्न विद्वानों में जी. डब्ल्यू ब्रिग्स, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, रामलाल श्रीवास्तव आदि विद्वानों ने गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोकों को गोरक्षशतक माना है। जबकि वैज्ञानिक रीति से कार्य कर पैतीस हस्तलिपियों के साथ कैवल्यधाम, श्रीमनमाधव योगमंदिर समिति, लोनावला, पुणे ने गोरक्षशतक का प्रकाशन किया है। जिनका आधार सौ श्लोकों में गोरक्षशतक के छः योगांगों का समावेश प्राप्त होता है वे हस्तलिपियाँ हैं 'इन्डिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन व अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, लखनऊ की जिससे यह ज्ञात होता है कि गोरक्षपद्धति गोरक्षशतक का ही विस्तार रूप है। जो कालांतर में इन सौ श्लोकों में विस्तार के कारण दो सौ श्लोकों का एक ग्रंथ बन गया जिसमें गोरक्ष शतक के उपरोक्त विषय बिखरे हुए हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि गोरक्षशतक गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोक नही है वरन गोरक्षशतक का विस्तार रूप गोरक्षपद्धति है।

मूल शब्द : हठयोग साधना, गोरक्षशतक, गोरक्षपद्धति, विभिन्न विद्वानों के मतों की समीक्षा।

प्रस्तावना

प्रथमतः गोरक्ष अर्थात गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) महिमाशाली नाथयोगी व मत्स्येन्द्रनाथ के प्रसिद्ध शिष्य। द्वितीय, शतक शब्द एक विशेषण है जो सौ श्लोकों का संग्रह हैं।[1] गोरक्षशतक एक महत्वपूर्ण हठयौगिक ग्रंथ है। जिसके रचनाकार नाथ योगी गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) माने जाते हैं। इस ग्रंथ में हठयोग की साधनाओं की चर्चा है। हठयौगिक साधनाओं के अंतर्गत आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, चक्र ध्यान, समाधि आदि के माध्यम से नाथ योगी, जीवनमुक्ति की अवस्था को प्राप्त करने की विद्याओं की चर्चा करते हैं। हठयौगिक अभ्यासों के माध्यम से शक्ति की दो विपरीत धाराओं को संयुक्त कर सुप्त शक्ति (कुण्डलिनी) को जागृत किया जाता है। गोरक्षशतक नाथयोगियों की साधनाओं(हठयोग) का आधारभूत ग्रंथ है। इस ग्रंथ का प्रभाव इतना है कि बाद के विभिन्न हठयौगिक ग्रंथों में व इनके विषय वस्तुओं को लेकर कालांतर में विभिन्न हठयौगिक ग्रंथ लिखे गए थे। जिससे इनके मूल श्लोकों में विस्तार होता चला गया। जिससे गोरक्षशतक के मूल सौ श्लोक बिखरने लगे थे। इस पर कार्य करना आवश्यक था। ताकि उपरोक्त ग्रंथ के विषय वस्तुओं व मूल विषयों को जाना जा सके। विभिन्न विद्वानों ने अपनी रचनाओं में गोरक्षशतक की चर्चा की है, जिसमें इस ग्रंथ के योगांगों की चर्चा प्राप्त होती है। नीचे विभिन्न विद्वानों के मतों के उपरान्त इस ग्रंथ पर हुए वैज्ञानिक रीति से अनुसंधान को प्रस्तुत किया गया है। जिससे गोरक्षशतक के मूल ग्रंथ की हमें जानकारी हो सके। विभिन्न विद्वानों के मत निम्नवत् हैं–गोरक्षशतक के मूल ग्रंथ पर चर्चा करते हुए, जार्ज डब्लू ब्रिग्स ने अपने भारत यात्रा के दौरान प्राप्त होने वाले नाथ साहित्यों में सैंतालीस साहित्यों को सूचीबद्ध किया है। परंतु स्वयं ब्रिग्स के अनुसार उनमें से बहुत सारे ग्रंथों की नामवैभिन्ता के कारण पुनरावृत्ति कि ओर भी संकेत किया था। इसी क्रम में ब्रिग्स ने अपने ग्रंथ में, गोरक्षशतक को गोरक्षपद्धति का ही भाग स्वीकार किया है। उनके अनुसार गोरक्षपद्धति दो सौ श्लोकों का ग्रंथ है, जिनके प्रथम के सौ श्लोकों को गोरक्षशतक अथवा गोरक्षशास्त्र एवं दूसरे सौ श्लोकों को योगशास्त्र कहा गया है। ब्रिग्स के अनुसार गोरक्षपद्धति के कुछ पेजों पर इसे गोरक्षसंहिता व कुछ जगहों पर शिवयोग शास्त्र भी कहा गया है। ब्रिग्स के द्वारा लिखित ग्रंथ 'गोरखनाथ एण्ड द कन्फटा योगी' में गोरक्षशतक छत्तीसवें स्थान पर है।[2] आगे के ग्रंथों की सूची में सैंतीस व अड़तीस में क्रमशः ज्ञानशतक व ज्ञानप्रकाश को गोरक्षशतक का ही नामांतर माना गया है। साथ ही गोरक्षशतक की टीकाओं में गोरक्षशतक टीका, गोरक्षशतक टिप्पणी, गोरक्षकल्प, गोरक्षपद्धति, योगसिद्धांत पद्धति व सिद्धांत पद्धति को भी सम्मिलित माना है। ब्रिग्स, गोरक्षशतक को नाथ सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण ग्रंथ मानते हैं। इस मान्यता के पीछे उनके द्वारा खोजे गये गोरक्षशतक की तीन हस्तलिपियाँ जो भण्डारकर ओरियन्टल इस्टीटयूट, पुने, संस्कृत कॉलेज बनारस व हरिद्वार बाजार मुम्बई से प्राप्त हस्तलिपियाँ सम्मिलित थीं।[3] ब्रिग्स के अनुसार मुम्बई बाजार से गोरक्षपद्धति नामक किताब खरीदा जिनमें प्रथम के सौ श्लोकों को गोरक्षशतक व दूसरे सौ श्लोकों को योगशास्त्र कहा गया था। ब्रिग्स के अनुसार गोरक्षपद्धति के दूसरे सौ श्लोकों को योगशास्त्र कहा गया है जिसमें प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि और मुक्ति विषयों की चर्चा की गयी है।[4] .ब्रिग्स गोरक्षशतक को तंत्र व योग सिद्धांतों का मिला हुआ रूप मानते हैं। गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर– 1981 में गोरखनाथ मंदिर से प्रकाशित, गोरक्षशतक जिसका संपादन व टीका रामलाल श्रीवास्तव ने किया है, जो ब्रिग्स के किए गये कार्यों को आधार मानते हैं।[5] और गोरक्षशतक को गोरक्षपद्धति का भाग स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक में गोरक्षशतक के एक सौ एक श्लोकों पर टीकाएँ लिखी गयीं हैं। जिसमें सोलह आधारों, व्योम पंचक, त्रिलक्ष्य आदि को भी शामिल कर दिया गया है। जबकि इसी ग्रंथ में श्लोक संख्या सात में गोरक्षशतक के छः योगांग बताए गए हैं। परंतु इस ग्रंथ में छः योगांगों का पूर्ण विवरण भी प्राप्त नहीं होता। इस ग्रंथ में केवल आसनों, नाड़ियों, प्राणायामों, मुद्राओं व बंधों की चर्चा की गयी है। जबकि प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि

की कोई चर्चा नहीं है, जो कि गोरक्षशतक के योगांगों में शामिल है।

हिंदी साहित्य के ज्यादातर विद्वानों के मतानुसार गोरक्षशतक, नाथ सिद्धों की साधनाओं का आधार ग्रंथ माना जाता है। हिंदी साहित्य के आदिकाल के अंतर्गत नाथसिद्धों व उनकी रचनाओं की जानकारी हमें प्राप्त होती हैं। हिंदी साहित्य के विद्वानों ने नाथसिद्धों की रचनाओं पर महत्वपूर्ण प्रकाश ड़ाला हैं। हिंदी साहित्य में गोरक्षशतक की चर्चा हिंदी के विद्वान, हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित ग्रंथ 'नाथ सम्प्रदाय' से प्राप्त होता है। जिसमें गोरक्षनाथ की रचनाओं के अंतर्गत अट्ठाईस नाथ साहित्यों की चर्चा की गयी हैं, इसके अंतर्गत गोरक्षशतक की भी चर्चा प्राप्त होती है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोरक्षशतक को गोरक्ष पद्धति का ही एक भाग माना है। डॉ. द्विवेदी के अनुसार गोरक्षपद्धति दो सौ श्लोकों का ग्रंथ है, जिनमें से प्रथम के सौ श्लोकों को गोरक्षशतक व दूसरे सौ श्लोकों को योगशास्त्र बताया गया हैं। डॉ. द्विवेदी ने जी डब्लू ब्रिग्स का संदर्भ देते हुए कहा है कि गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोक जो गोरक्षशतक है उसका ब्रिग्स के द्वारा रोमन अक्षरों में छापे जाने व अंग्रेजी में अनुवाद किये जाने का उल्लेख किया है।[6] उपरोक्त कथनों के साथ ही डॉ. द्विवेदी ने डॉ. प्रबोधचंद बागची के कौलवालि निर्णय की भूमिका का संदर्भ देते हुए कहा है कि डॉ. बागची ने कौलावलि निर्णय की भूमिका में जिन विषयों की चर्चा की है, वे विषय, जी. डब्लू ब्रिग्स द्वारा प्रस्तुत किये गये गोरक्षशतक की विषय वस्तुओं से मिलती है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोरक्षशतक के अन्य नामों में ज्ञानशतक व ज्ञानप्रकाश को भी स्वीकार करते हैं।[7] बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय ने 'गोरक्षनाथ नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में' नामक ग्रंथ में नाथ साहित्यों के अंतर्गत विभिन्न विद्वानों के अनुसार बताए गये नाथ साहित्यों की चर्चा की है। डॉ. उपाध्याय ने गोरक्षपद्धति के दो सौ श्लोकों के विस्तार में गोरक्षसंहिता व हठप्रदीपिका के श्लोक संदर्भों को देखकर यह अनुमान लगाया है कि गोरक्षशतक गोरक्षनाथ की रचना नहीं है। इस पर यह तर्क है कि हठप्रदीपिका का काल (ब्रिग्स का संदर्भ देते हुए) चौदहवीं शताब्दी मानते हैं। जबकि गोरक्षनाथ का काल हठप्रदीपिका कृत स्वात्माराम से पूर्व मानते हुए उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हैं। वही आगे गोरक्षसंहिता को गोरक्षशतक के श्लोकों में ही अंतर्भूत मानते हैं।[8] डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय ने गोरक्षसंहिता के विषय वस्तुओं की चर्चा की है। इसके अंर्तगत उन्होंने बताया है कि गोरक्षसंहिता के चौथे श्लोक में गोरक्षशतक की बात कही गयी है। गोरक्षसंहिता की चर्चा करते हुए उसकी विषय वस्तु का उल्लेख भी किया गया है। जिसकी विषय वस्तु गोरक्षशतक के समान ही है। जिसमें आसन, प्राणसंरोध, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि विषयों का उल्लेख प्राप्त होता हैं।[9] उपरोक्त कथनों के उपरान्त डॉ. उपाध्याय यह स्वीकार करते हैं कि गोरक्षशतक को नाथ सम्प्रदाय में, बाद के सिद्धों व अनुयायिओं ने विशेष माना है। क्योंकि इस ग्रंथ की भाष्य, टीका, व्याख्याएँ कालांतर में भी प्राप्त होती रही है। परंतु डॉ. उपाध्याय गोरक्षशतक के मूल छः विषयों के साथ मूल ग्रंथ का उल्लेख नहीं कर पाए। डॉ. उपाध्याय के उपरोक्त ग्रंथ में गोरक्षसंहिता के विषयों के अंर्तगत कुछ मुद्राओं के नामोंल्लेखों से यह प्रतीत होता है कि गोरक्षसंहिता का आधार, गोरक्षशतक ही रहा होगा। साथ ही बाद के हठयौगिक ग्रंथों से भी अन्य मुद्राओं व षोड्शआधारों को भी गोरक्षसंहिता में स्थान दिया गया होगा। डॉ. मोहन सिंह के अनुसार गोरक्षशतक व गोरक्षसंहिता दोनों ग्रंथ, एक साथ गोरक्षपद्धति के नाम से प्रकाशित बतायी गयी है।[10] जो कि बाद के प्रमाणों से यह सही, नही जान पड़ती।

गोरक्षशतक पर कैवल्यधाम लोनावला के संस्थापक स्वामी कुवल्यानंद व उनके सहयोगियों ने पहले ही यह अनुमान लगा लिया था कि गोरक्षशतक सौ श्लोकों का एक ग्रंथ है। इस पर उनका आधार था, गोरक्षशतक (लोनावला प्रकाशन) के चतुर्थ श्लोक में प्राप्त योग के षड़ंग जिसमें आसन, प्राणसंरोध, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि विषय सम्मिलित हैं। इस अनुसंधान के दौरान 'इन्डिया ऑफिस लायब्ररी' लंदन से प्राप्त गोरक्ष शतक की एक हस्तलिपि में उपरोक्त छः योगांग प्राप्त हुए, जिसके सौ श्लोकों में दो श्लोकों की कमी थी और इसी हस्तलिपि के आधार पर कैवल्यधाम, लोनावला से गोरक्षशतक, अनठानवें श्लोकों के साथ पहली बार अंग्रेजी संस्करण में प्रकाशित हुआ था। परंतु अनुसंधान जारी रहा और इसी दौरान 'अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्', लखनऊ से एक और हस्तलिपि प्राप्त हुई जिसमें एक सौ एक श्लोक थे जो गोरक्षशतक के छः विषयों को पूरा करते थे। 'इन्डिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन' से प्राप्त हस्तलेख में जहाँ दो श्लोकों की कमी थी उन कमियों को 'अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ' से प्राप्त हस्तलिपि में से श्लोक संख्या तेरासी जिसमें लम्पिका ध्यान की चर्चा थी व श्लोक संख्या सनतानवें जिसमें समाधि की चर्चा थी, अतः इन दानों श्लोकों को इन्डिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन में सम्मिलित किया गया जो इन्डिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन के मूल हस्तलिपि में नहीं थे।[11] इस प्रकार सौ श्लोकों के साथ गोरक्षशतक का प्रकाशन कैवल्यधाम, लोनावला के द्वारा किया गया। गोरक्षशतक के इन अनुसंधान कार्यों के दौरान कैवल्यधाम को गोरक्षशतक की विषय वस्तु व उनकी हस्तलिपियों के बारे में जी. डब्लू. ब्रिग्स (गोरखनाथ एण्ड द कन्फटा योगी ग्रंथ के लेखक) हिंदी साहित्य के विद्वान, हजारी प्रसाद द्विवेदी व मोहन सिंह आदि के ग्रंथों को देखकर व प्राप्त हस्तलिपियों के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि उपरोक्त विद्वानों ने गोरक्षशतक को गोरक्षपद्धति का प्रथम सौ श्लोकों का संग्रह मान लिया था। जबकि गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोक गोरक्षशतक के छः योगांगों को पूरा नहीं करते थे। ज्यादातर विद्वानों ने गोरक्षशतक पर ब्रिग्स के मत का ही अनुशरण किया है। जो वर्तमान प्राप्त प्रमाणों से अनुचित जान पड़ता है।[12] की गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोक ही गोरक्षशतक है। कैवल्यधाम के द्वारा गोरक्षशतक की पैंतीस हस्तलिपियों की समान विषय वस्तु के साथ, मूलग्रंथ को खोज निकाला गया।

इस प्रकार पैंतीस हस्तलिपियों के आधार पर सौ श्लोकों वाली गोरक्षशतक की संकल्पना छःयोगांगों की विषय वस्तु के साथ पूरा माना गया। गोरक्षशतक का अंग्रेजी संस्करण के उपरान्त हिंदी संस्करण कैवल्यधाम, लोनावला द्वारा प्रकाशित किया गया।[13] गोरक्षशतक की हस्तलिपियाँ व काल का निर्धारण– गोरक्षशतक की मूल ग्रंथ के सम्पादन करने वाले कैवल्यधाम लोनावला के द्वारा इस ग्रंथ के उनचालीस हस्तलिपियों का संग्रहण किया गया। इस ग्रंथ की बंगला लिपि में लिखी हुई छः हस्तलिपियाँ भी प्राप्त हुई थीं। साथ ही इनमें उड़िया लिपि व भोजपत्र में लिखीं हुई हस्तलिपियाँ भी सम्मिलित हैं। जिनमें से पैंतीस हस्तलिपियों की विषय वस्तु समान थीं। अन्य हस्तलिपियों को चयनित पैंतीस हस्तलिपियों की ही प्रतिलिपि बतायी गयीं हैं। उपरोक्त हस्तलिपियाँ लंदन, लखनऊ, पूना, कलकत्ता, वाराणसी, बड़ौदा, अड्यार, बीकानेर, तंजौर, मद्रास, मण्डलेश्वर के हस्तलेख पुस्तकालयों से प्राप्त बताए गये हैं।[14] गोरक्षशतक की प्राप्त सभी हस्तलिपियों में उनके मूल विषय अर्थात आधार श्लोक निम्न है–

आसनं प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणा।
ध्यानं समाधिरेतानि योगांगानि वंदति षट्।।[15]

प्राप्त होते हैं, जो गोरक्षशतक के मूल विषय को व्यक्त करता है। गोरक्षशतक के छः योगांगों के अंतर्गत– 1.आसनों में – पद्मासन, सिद्धासन, नाड़ियों में दस प्रमुख नाड़ियों की चर्चा है। 2.प्राणायाम– पाँच वायुओं व उनके उपवायुओं की चर्चा है, नाड़ी शोधन प्राणायाम की चर्चा है। प्राणायाम को तीन मात्राओं में अधम, मध्यम व उत्तम प्रकार बताए गये हैं। इसी के अंर्तगत ही चक्रों में सात चक्रों की चर्चा है। मुद्राओं में महामुद्रा, खेचरी, नभोमुद्रा, उड्डियान, जालंधर और मूलबंध, विपरीत करणी की चर्चा प्राप्त होती हैं। 3.प्रत्याहार–

विपरीतकरणी से सूर्य स्थान नाभि को ऊपर व सोममण्डल स्थान तालु को नीचे करने की बात कही है जो प्रत्याहार के नाम से अभिहित किया गया है। 4.धारणा– पंच तत्वों पर धारणा, शरीर के निश्चित स्थानों, तत्व का आकार, बीज मंत्र, उनके रंग, धारणा का समय, उनके देवता व धारणा के परिणामों की चर्चा की गयी हैं। 5.ध्यान– सगुण व निर्गुण ध्यान के दो प्रकारों की चर्चा है। जिसके अंतर्गत शरीरस्थ चक्रों व विशेष अंगों को मिलाकर अष्ट ध्यानों की चर्चा है। 6.समाधि– मन का विषयों से शून्य हो जाने व अभेद ज्ञान हो जाने को ही समाधि कहा गया है।

उपरोक्त हस्तलिपियों में से सोलह हस्तलिपियों में गोरक्षशतक का काल निर्धारित है। परंतु अन्य हस्तलिपियों में काल की चर्चा प्राप्त नहीं होती। इन सोलह हस्तलिपियों में सबसे पुरानी हस्तलिपि वाराणसी (सरस्वती भवन, गवर्नमेंट संस्कृत लायब्ररी) से प्राप्त बतायी गयी है, जिसमें 1690 ई. का उल्लेख है व इनमें से अधुनातन हस्तलिपि, रॉयल एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता की प्राप्त होती है। जिनका काल 1943–44 ई. बताया गया है।[16] विभिन्न विद्वानों के मतों की समीक्षा करने पर नाथ योगी गोरक्षनाथ का काल, दसवीं शताब्दी ठहरता है। गोरक्षशतक व गोरक्षपद्धति की हस्तलिपि – गोरक्षशतक का ही विस्तार रूप गोरक्षपद्धति है। गोरक्षशतक की हस्तलिपियों की खोज के दौरान पूना से प्राप्त हस्तलिपि संख्या एक का ही विस्तार रूप रॉयल एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता से प्राप्त, चार हस्तलिपियों को बताया गया है। अर्थात पूना एवं कलकत्ता से प्राप्त हस्तलिपियाँ मिलकर एक ग्रंथ बनता है। जो कि इस पर लक्ष्मीनारायण द्वारा बालप्रबोधिनी संस्कृत टीका भी प्राप्त होती है। यही ग्रंथ लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित हुई है। जो कि गोरक्षपद्धति से पूरी मिलती हुई बतायी गयी है। इस प्रकार गोरक्षशतक के मूल सौ श्लोकों में विस्तार होते–होते दो सौ श्लोक का ग्रंथ बन गया जिसे गोरक्षपद्धति के नाम से जाना जाने लगा। इसी गोरक्षपद्धति के दो सौ श्लोकों के बीच गोरक्षशतक के सौ मूल श्लोक बिखरे हुए हैं। जो योग के छः अंगों को पूरा करते हैं।[17] उपरोक्त गोरक्षपद्धति के दो सौ, संस्कृत श्लोकों पर, महिधर शर्मा की हिंदी टीका भी प्राप्त होती है।[18]

उपसंहार

गोरक्षनाथ कृत गोरक्षशतक, सौ श्लोकों का एक महत्वपूर्ण हठयौगिक ग्रंथ है। जिसमें छः योगांगों– आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का विस्तार प्राप्त होता है। उपरोक्त ग्रंथ के मूल हस्तलिपियों पर कार्य करते हुए कैवल्यधाम, लोनावला ने पैंतीस हस्तलिपियों को आधार मानकर महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसके पूर्व गोरक्षशतक पर विभिन्न विद्वानों, जानकारों जिनमें जी.डब्लू. ब्रिग्स, हिंदी साहित्य के विद्वान– हजारी प्रसाद द्विवेदी, मोहन सिंह, नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, रामलाल श्रीवास्तव आदि का कथन था कि गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोक ही गोरक्षशतक है, यह असत्य साबित होता है। क्योंकि गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोक गोरक्षशतक के छः योगांगों को पूरा नहीं करते। साथ ही कैवल्यधाम के अनुसंधान कार्यों के दौरान प्राप्त हस्तलिपियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोरक्षपद्धति गोरक्षशतक का ही विस्तार है। उनके आधार ग्रंथ मुख्य रूप से पूना से प्राप्त सौ श्लोकों वाली एक गोरक्षशतक की हस्तलिपि है। जिसके अंत में गोरक्षशतकम् सम्पूर्णम् लिखा है। लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई से शकसंवत् 1855. (1933 ई.) में प्रकाशित गोरक्षपद्धति का प्रथम सौ श्लोक पूना वाले गोरक्षशतक से पूर्णतः मेल रखते हैं। यही गोरक्षपद्धति की हस्तलिपि ही ब्रिग्स के कथन का आधार थी। परंतु स्वयं ब्रिग्स ने गोरक्षशतक के चतुर्थ श्लोक में वर्णित विषय वस्तु के अनुसार गोरक्षशतक को नहीं देखा जो कि गोरक्षशतक की विषय वस्तु गोरक्षपद्धति के दो सौ श्लोकों में बिखरी हुई थी। हिंदी साहित्य के विद्वान डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी अपने ग्रंथ नाथसम्प्रदाय में ब्रिग्स के कथन का अनुशरण किया और गोरक्ष पद्धति के सौ श्लोकों को ही गोरक्षशतक कह दिया। रामलाल श्रीवास्तव ने गोरक्षशतक का संपादन व हिंदी में टीका लिखी है जो गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर, उत्तरप्रदेश से प्रकाशित है। उन्होंने भी ब्रिग्स का अनुशरण करते हुए, गोरक्षपद्धति के प्रथम सौ श्लोकों गोरक्षशतक कहा है, जो कि सत्य नहीं है। नागेन्द्रनाथ उपाध्याय भी इस पर सही व्यक्तव्य नहीं दे पाए। वैज्ञानिक रीति से कार्य करने वाले कैवल्यधाम, लोनावला ने गोरक्षशतक की तीन दर्जन से भी अधिक हस्तलिपियों से गोरक्षशतक की मूल विषय वस्तु (छःयोगांगों) से संबंधित श्लोकों को एकत्रित किया जो कि सौ श्लोकों में पूर्ण होते हैं। यही सौ श्लोक गोरक्षपद्धति के दो सौ श्लोकों में भी बिखरे हुए हैं। अर्थात गोरक्षशतक के सौ श्लोकों का विस्तार होते–होते गोरक्षपद्धति के रूप में आ गया। साथ ही कालांतर में गोरक्षशतक की प्राप्ति के बाद हस्तलेखों में तीन सौ श्लोकों का भी पता चलता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इनमें श्लोकों की तादात बढ़ती चली जा रही थी, व मूल श्लोकों का विस्तार हो रहा था। जिससे इनके मूल श्लोकों के खोने का भय बना हुआ था। परंतु कैवल्यधाम, लोनावला ने गोरक्षनाथ की हठयोग साधना का इस, महत्वपूर्ण नाथ साहित्य, गोरक्षशतक के मूल ग्रंथ वैज्ञानिक रीति से प्रकाशित कर संरक्षित किया।

संदर्भ सूची

1. कृष्णकान्त दीक्षित, उपाध्याय सूर्यनारायण, संकलनकर्ता, अमर वृहत् शिक्षार्थी हिंदी–हिंदी शब्दकोश, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 1154.
2. ब्रिग्स, जार्ज वेस्टन, गोरखनाथ एण्ड द कन्फटा योगिज, वाय, एम.सी.ए. पब्लिसिंग हाऊस कलकत्ता, 1938, पृ.254.
3. वहीं
4. वहीं, पृ.251–257
5. श्रीवास्तव रामलाल, संपादक एवं टीकाकार, गोरक्षशतक, गोरखनाथ मन्दिर गोरखपुर, 1981, पृ. 23–24.
6. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, नाथ सम्प्रदाय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2010, पृ.95–96.
7. वहीं, पृ.97–100.
8. उपाध्याय, नागेन्द्रनाथ, गोरखनाथ नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2009, पृ. 46–47.
9. वहीं,पृ.114–116.
10. दार्शनिक साहित्यानुसन्धान विभाग, गोरक्षशतकम् (हिंदी रूपांतरण), कैवल्यधाम, श्रीमनमाधव योग मंदिर समिति, लोनावला, पुणे, प्रथम आवृत्ति, 2013, पृ.19.
11. वहीं, पृ.09–10.
12. दार्शनिक साहित्यानुसन्धान विभाग, गोरक्षशतकम् (हिंदी रूपांतरण), कैवल्यधाम श्रीमनमाधव योग मंदिर समिति, लोनावला, पुणे, 2013, भूमिका, पृ.21.
13. वहीं, पृ.07.
14. दार्शनिक साहित्यानुसन्धान विभाग, गोरक्षशतकम,(हिंदी रूपांतरण) कैवल्यधाम श्रीमनमाधव योग मंदिर समिति, लोनावला, पुणे, प्रथम आवृत्ति, 2013,पृ.20.
15. गोरक्षशत, श्लोक सं.04, कैवल्यधाम, लोनावला, पुणे, 2013.
16. दार्शनिक साहित्यानुसन्धान विभाग, गोरक्षशतकम् (हिंदी रूपांतरण),कैवल्यधाम,श्रीमनमाधव योग मंदिर समिति, लोनावला, पुणे, प्रथम आवृत्ति, 2013, पृ.15–18.
17. वहीं, पृ.20–23
18. शर्मा महिधर, भाषानुवादक (हिंदी), गोरक्षपद्धति, वेंकटेश्वर छापाखाना, कल्याण–मुंबई, 1867.